

समीर सुहाई ( १९२ )

साई प्राण प्यारे झूलो जीअ जियारे  
सांवण की रितु भाई है॥

वृन्दावन धाम में कैसी हरयाली है  
त्रिबेली खिल उठी फूली डाली डाली है  
मलय समीर बहे सुखदाई है॥

रिम झिम रिम झिम बादल बरस रहे  
स्वाती बूंद पाइ आज चातक आनंद लहे  
करि मोर शोर देत वाधाई है॥

कदम की डार मांह झूले की बहार है  
शुक सारिकाएं बैठी बैठी डार डार है  
प्यारी बृज भूमि कीन्ही पहुनाई है॥

नन्द के नन्दन और वृषभान नन्दनी  
साई को झुलावत है जोड़ी जग वन्दनी  
अमड़ि गरीबि भई मन भाई है॥

नाचती गावती गोपी फूली न समावती  
युगल स्नेही साई देखि सुख पावती  
जंह तंह जै धुनि छाई है॥

शारदा और राग कला चंवर झुलाइ रही

मल्हार सारंग मिलि गुण गीत गाइ रही  
नभ फूल वर्षा सुहाई है॥

घन मांहि दामिनी दुरि दुरि दमकत  
मानो साई प्रेम की चान्दनी है चमकत  
जहां तहां हरि लीला दरसाई है॥

मिठा बाबा मैगसि चंद हिण्डोले में झूलो  
सियाराम गोद लिए सदां फलो फूलो  
आशीश हमारी यह सदाई है॥